ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2024; 10(12): 05-08
www.allresearchjournal.com
Received: 15-09-2024
Accepted: 22-10-2024

अंतिमा शर्मा
शोधार्थी इतिहास विभाग पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय, सीकर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
अंतिमा शर्मा
शोधार्थी इतिहास विभाग पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय, सीकर, राजस्थान, भारत

संरक्षण की बाट जोहती सांस्कृतिक विरासत – "शेखावाटी के विशेष संदर्भ में"

अंतिमा शर्मा

सारांश
सांस्कृतिक विरासत वह है जो हमें हमारे पूर्वजों से प्राप्त हुई है और हमारे चारों ओर विद्यमान है। यह किसी भी क्षेत्र की विशिष्ट पहचान का आधार होती है, इसके दो प्रमुख प्रकार हैं मूर्त और अमूर्त । मूर्त सांस्कृतिक विरासत में पवित्र स्मारक जैसे – स्तूप, विहार, मंदिर, मस्जिद, चर्च, अभिलेख, सिक्के, दुर्ग, महल, हवेलियां, छतरियां, जल स्थापत्य जैसे अनेकों आयाम आते हैं, वही अमूर्त सांस्कृतिक विरासत में भाषा, रीति रिवाज, धार्मिक – विश्वास, मेले, त्योहार, संगीत, नृत्य, खान पान, वेशभूषा, हस्तकलाएं इत्यादि आती है। भारत सांस्कृतिक विरासत के क्षेत्र में विश्व के सबसे समृद्ध देशों में एक है, भारतीय संस्कृति जीवन जीने का संस्कार है वह पद्धति जो प्रकृति के साथ सामंजस्य से चलती है तथा संतुलित जीवन का आधार है। देश के सबसे बड़े राज्य राजस्थान के उत्तर पूर्व में स्थित सांस्कृतिक विशिष्टता से भरा एक प्रमुख क्षेत्र जो चार प्रमुख जिलों सीकर, झुन्झुनू, नीमकाथाना व चुरू में विस्तारित है जिसे 'शेखावाटी' के नाम से जाना जाता है, जिसके विषय में इस शोध पत्र में हम जानकारी प्राप्त करेंगे कि किस प्रकार इस क्षेत्र के महत्वपूर्ण विरासत स्थल व यहां की लोक परंपराएं समृद्ध हैं तथा संरक्षण के अभाव में निरंतर क्षीण होती जा रही हैं तथा इन असीम संभावनाओं के खजाने को किस प्रकार बेहतर तरीके से हम संजोकर रख सकते हैं इस पर जानकारी प्राप्त करेंगे।

कूट शब्द: सांस्कृतिक विरासत, मूर्त-अमूर्त, शेखावाटी, विरासत स्थल कला शिल्प, सामाजिक जागरूकता, सांस्कृतिक संरक्षण

प्रस्तावना
सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर सेंट्रल विस्ता प्रोजेक्ट तक भारतीय सभ्यता व संस्कृति कई चरणों से गुजरी है, जिसके अवशेष आज विरासत के रूप में है जो हमारी उत्पत्ति, विकास, विनाश और पुनर्विकास की झलकियां हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है। इसी सांस्कृतिक समृद्धता की जीवंत झलक हमें भारत के भौगोलिक रूप से सबसे बड़े राज्य राजस्थान में देखने को मिलती है। राजस्थान के ऐतिहासिक गौरव और महान वीरों की शौर्य गाथा के दर्शन आपको इस मरुभूमि में पग – पग पर मिलेंगे, जो इसकी विरासतीय समृध्दिता का परिचायक है। इसी मरुभूमि का एक प्रमुख भाग शेखावाटी प्रदेश है जो विशालकाय मरुस्थल के पूर्वोत्तरी अंचल में फैला हुआ है। इसका शेखावाटी नाम विगतकालीन पांच शताब्दी में इस भूभाग प्रशासन करने वाले 'शेखावत' क्षत्रियों के नाम पर पड़ा है इसके संस्थापक महाराव शेखा जी थे वर्तमान में इसमें चार प्रमुख जिले सम्मिलित है सीकर, झुंझुनू, नीमकाथाना, चूरू। शेखावाटी की विरासत की पृष्ठभूमि और महत्व –14 वीं शताब्दी का एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र शेखावाटी, अब राजस्थान का एक पर्यटन केंद्र है क्योंकि क्षेत्र के समृद्ध व्यापारियों के राज्य ठाठ-भारत का एक प्रतिबिंब, शेखावाटी, उन व्यापारियों की विरासत से गर्वित है, जिन्होंने अपने वास्तु रत्न इसे समर्पित किया इस क्षेत्र का हर नुक्कड़ और कोना लोककथाओ, धार्मिक किवंदतियों, और और इसके भव्य अतीत की विशिष्ठाओं के चारों ओर घूमती रंगीन उमंग भरी चित्रकलाओं से जीवंत है। शेखावाटी नाम लेने मात्र से ही आज भी शौर्य का संचार होता है। शिक्षा, साहित्य, संस्कृति तथा कला की भाव उर्मियाँ उद्वेलित होने लगती है। यहां की भित्ति चित्रकला ने तो शेखावाटी का नाम पूरे संसार में उजागर किया है। यह धन्य धरा ऋषियों की तपोभूमि, कृषकों की कर्मभूमि रही है। देखा जाए तो संपूर्ण राजस्थान मंदिरों, बावड़ियों, किलो, जल निकायों, महलों से भरा हुआ है, परंतु दिल्ली- जयपुर- बीकानेर के रास्ते पर स्थित उत्तर-पूर्वी राजस्थान का शेखावाटी क्षेत्र आगंतुकों को यहां सदियों पहले बसे धनाढ्य व्यापारियों की शानदार रूप से अलंकृत हवेलियों की ओर आकर्षित करता है यहां की दीवारों पर बने सुंदर भित्ति चित्र बेहद आकर्षक है जिसके कारण इसे देश के सबसे बड़ी " ओपन आर्ट गैलरी" (खुली कला दीर्घा) कहा जाता है। शेखावाटी में सांस्कृतिक विरासत के प्रमुख आकर्षण - शेखावाटी सांस्कृतिक विरासत का खजाना है यहां केऐतिहासिक स्थल, पारंपरिक कला शिल्प, जीवंत त्योहार और स्थानीय व्यंजन इसके समृद्ध सांस्कृतिक दृश्य में भूमिका निभाते हैं। इस खंड में इन्हीं आकर्षणों का विस्तार से अध्ययन करना है और उनके विरासती महत्व पर प्रकाश डालना है।

(क) ऐतिहासिक स्थल: शेखावाटी प्राचीन सभ्यता से लेकर आधुनिक हवेलियों तक एक लंबी ऐतिहासिक स्थलों की श्रृंखला रखता है इसके प्रमुख रूप इस प्रकार हैं –

- **प्राचीन सभ्यता स्थल**: शेखावाटी सभ्यता का पालना रहा है इस क्षेत्र में ताम्र पाषाणिक संस्कृति की जननी स्थल गणेश्वर स्थित है। इसी के साथ यहां खेतड़ी वह सुनारी जैसे स्थल भी स्थित है।
- **हवेलिया:** शेखावाटी की हवेलियां,जो एक समय पर मारवाड़ी व्यापारियों का निवास स्थान हुआ करती थी,इस समुदाय की भव्य जीवन शैली को दर्शाती हैं। जहां एक ओर जहां राजस्थान के अन्य शहरों में बड़े महलों और किलो का वर्चस्व था वहीं शेखावाटी जो व्यापारिक समुदाय अर्थात सेठों द्वारा निर्मित हवेलियों से सुसज्जित हुआ। यहां सफर कर रहे अमीर व्यापारियों ने बाहरी दीवारों को अलंकृत करने पर खास जोर देते हुए इन हवेलियों की वास्तुकला पर बहुत ध्यान दिया, मारवाड़ियों ने अपनी हवेलियों में लकड़ी के विशाल द्वार, प्रक्षेपित छज्जे और अंदरूनी आंगन बनवायें। शेखावाटी क्षेत्र में मंडावा, नवलगढ़, झुंझुनू, फतेहपुर, रामगढ़ शेखावाटी, बिसाऊ, अलसीसर,लक्ष्मणगढ़ समेत कई गलियों से गुजरते हुए आप इनकी भव्यता को देख सकते हैं।
- **भित्तिचित्र कला:** शेखावाटी की संस्कृति के वैश्विक प्रसार का एक प्रमुख भाग है यहां की भित्तिचित्र कला जो यहां की हवेलियां, छतरियों समेत अन्य इमारतें पर परिरक्षित है। यह चित्रकारियां दर्शकों को कई रोचक कहानियां सुनाती हैं। जहां एक और यह कृष्ण लीला, राधा कृष्ण के पवित्र प्रेम का वर्णन करती हैं, गणेश वंदना, दरबारीजीवन, महाकाव्यों का चित्रण करती हैं वहीं दूसरी ओर यह हमें तत्कालीन समय के सामाजिक जीवन की झांकी प्रदर्शित करती है। इनका चित्रण प्राकृतिक रंगों के अद्भुत मिश्रण से किया गया तथा बेल्जियम कांच का विशिष्ट प्रयोग किया गया। यह दृश्य वर्तमान में पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केंद्र है
- **दुर्ग:** शेखावाटी क्षेत्र में कई ऐतिहासिक व सामरिक महत्व के दुर्ग बने हुए हैं जो मुख्यतः तत्कालीन समय की जरूरत के हिसाब से बनाए गए जिनमें से प्रमुखता लक्ष्मणगढ़ का किला, रतनगढ़ का किला, पाटन का किला, देवगढ़ का किला प्रमुख है यह किले संरक्षण के अभाव में लगातार क्षीण होते जा रहे हैं।
- **मंदिर:** मंदिर सांसारिक जीवन पर आध्यात्म के महत्व का प्रतीक है शेखावाटी में कई प्रसिद्ध मंदिर है जो आस्था के प्रमुख केंद्र, पर्यटन उद्योग के प्रमुख स्तंभ के रूप में है। शेखावाटी के प्रमुख मंदिर हैं - खाटू श्याम जी मंदिर, हर्षनाथ मंदिर, रेवासा धाम, जीण माता मंदिर, रानी सती मंदिर, शाकंभरी माता मंदिर, सालासर बालाजी मंदिर आदि।
- **मस्जिद:** शेखावाटी में कई प्रमुख दरगाह व मस्जिद है जिसमें से सबसे प्रसिद्ध है हाजिब शवकरबार पीर बाबा की दरगाह जो नरहड़ (झुंझुनू) में स्थित है यह दरगाह कौमी एकता की एक जीवंत मिसाल है। इसके अतिरिक्त फतेहपुर में स्थित हाजी मोहम्मद नजमुद्दीन चिश्ती की दरगाह भी आस्था का बड़ा केंद्र है।
- **छतरियां:** राजस्थान में राजाओं, सामंतों, श्रेष्ठियों की मृत्यु के पश्चात स्मृति में निर्मित स्थापत्य की दृष्टि से बनाए गए विशेष स्मारकों को छतरियां व देवल के नाम से जाना जाता है। शेखावाटी में कई विशिष्ट छतरियां है परंतु रामगढ़ शेखावाटी में निर्मित 'सेठ रामगोपाल पोद्दार' की छतरी इस क्षेत्र की सबसे बड़ी छतरी है जिसमें रामायण के सुंदर चित्र उकेरे गए हैं।
- **जल स्थापत्य:** शेखावाटी में बहुत से सुंदर विभिन्न आयामों के उपयोगी जलाशय हैं यहां 200 से अधिक जलाशय हैं। झुंझुनू की मेड़तनी बावड़ी, जीतमल का जोहड़ा प्रमुख है।

(ख) शेखावाटी की अमूर्त सांस्कृतिक विशेषता: शेखावाटी की संस्कृति विचित्रता व विविधता से भरी है जिसमें विशिष्टता भी भरपूर है यहां की संस्कृति में सरलता,समरसता व शौर्य है तो वहीं आस्था, उल्लास व आनंद भी अनंत है। इस क्षेत्र के रीति-रिवाज, मेले, त्योहार, नृत्य, संगीत,पहनावा,खान पान अपनी विरासत की खुशबू लिए हैं।

- **वेशभूषा:** शेखावाटी अंचल का पहनावा अनूठा है यहां की महिलाएं लहंगा,लुगड़ी, कांचली,कुर्ती पहनती है वहीं पुरुषों द्वारा धोती-कुर्ता तथा साफा पहना जाता है उदाहरणतः "स्वामी विवेकानंद जी" द्वारा पहने जाने वाला साफा शेखावाटी की पहचान रही है। हालांकि वर्तमान में बढ़ते शहरीकरण के कारण पहनावे पर पश्चिमीकरण हावी हो रहा है।
- **खानपान:** शेखावाटी के लोगों का खानपान मौसम के हिसाब से रहता है गर्मियों में गेहूं व जौ के व्यंजन तथा सर्दियों में बाजरे की भूमिका प्रमुख होती है। शेखावाटी का दाल-बाटी - चूरमा व चिड़ावा के पेड़े तो देश भर में प्रसिद्ध है ही परंतु साथ यहां का पारंपरिक खानपान अति विशिष्ट है जिसके कुछ व्यंजन इस प्रकार हैं – बाजरे की रोटी, मोठ बाजरा की खिचड़ी, खाटे की राबड़ी, गट्टे का साग, काचरे की चटनी, कैर - सांगरी का साग प्रमुखत: होते हैं। मीठे में गुड़ की लापसी, खरीटीं के लडडू, मैथी के लडडू, ग्वारपाठे के लड्डू व शरबत में बील व पुदीने का शरबत प्रमुखतः होता है।

यह व्यंजन इस क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप प्रतिदिन के आहार के अंग है परंतु लगातार पाश्चात्य प्रभाव के बढ़ने से उनके विकल्प के रूप में बर्गर, पिज़्ज़ा, पेप्सी, कोका-कोला, मैगी समेत अन्य पैकेट बंद खाने का प्रसार बढ़ता जा रहा है। जिससे कुपोषण समेत अनेक गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। अतएव पारंपरिक खान-पान के प्रति सजकता रखकर निरोग जीवन की ओर कदम बढ़ाने की आवश्यकता है। इस विरासत के संरक्षण का महत्व सिर्फ प्राचीन परंपराओं के संरक्षण से हैं अभी तो बेहतर व स्वस्थ भविष्य की नींव के रूप में है।

- **लोक नृत्य में लोकगीत:** शेखावाटी की संस्कृति में लोक नृत्य का अपना विशेष महत्व है। गिदंड, चंग, कच्छी घोड़ी, ढप प्रमुख है।यह लोक नृत्य युवा पीढ़ी को हमारी संस्कृति से परिचित कराते हैं। वही लोक गीतों में चौमासे के गीत, कार्तिक मास के गीत आते है इनके साथ ही जन्म से मृत्यु तक के विभिन्न संस्कारों पर गाए जाने वाले लोकगीत प्रचलित हैं। परंतु वर्तमान में बॉलीवुड व हॉलीवुड के अंधानुकरण से भावी पीढ़ियां द्वारा इनका तिरस्कार इनके अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगा रहा है।
- **मेले व त्यौहार:** शेखावाटी में त्योहारों की एक अलग छठा है यहां होली, दिवाली, दशहरा, रक्षाबंधन, रमजान, ईद के साथ-साथ ही स्थानीय त्यौहार बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं जिसमें गणगौर, गोगा नवमी, हरियाली तीज आदि आते हैं। शेखावाटी में कई प्रसिद्ध मेलें लगते हैं जहां देश-विदेश से लोग आते हैं यह जन आस्था के साथ-साथ एकता का भाव संगम दर्शाते हैं उदाहरणतः खाटू श्याम जी का लक्खी मेला, जीण मातामेला, नरहड़ पीर का मेला, फतेहपुर उर्स आदि
- **शेखावाटी की भाषा व साहित्य:** शेखावाटी राजस्थानी भाषा की एक बोली है जो इस क्षेत्र के 30 लाख वक्ताओं द्वारा बोली जाती है। इस बोली का साहित्य भी अत्यंत समृद्ध है जिस पर विस्तृत शोध कार्य की आवश्यकता है।

सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण आर्थिक प्रगति का आधार: शेखावाटी क्षेत्र के ऐतिहासिक स्थल विरासत के स्मारक चिन्हों के साथ ही प्रगति के आधार स्तंभ भी हैं।

- **पर्यटन का आकर्षण केंद्र:** शेखावाटी क्षेत्र पर्यटकों को जहां एक और मंडावा, बिसाऊ,झुंझुनू,नवलगढ़,रामगढ़,लक्ष्मणगढ़,फतेहपुर जैसे स्थानों की भव्यता का अनुभव करते हैं वही खाटू श्यामजी, हर्ष,रेवासा,नरहड़ जैसे स्थान आस्था के दर्शन देते हैं। साथ यहां के लोक संस्कृति आंगतुकों को रोमांचित कर देती है।

- **रोजगार सृजन व राजस्व प्राप्ति का साधन**: सांस्कृतिक पर्यटन प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार उत्पत्ति में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं समस्त पर्यटन क्रियाएं राजस्व के स्त्रोत होती है जिसमें पर्यटकों के निवास, भोजन, परिवहन, ऐतिहासिक स्थलों में प्रवेश शुल्क, स्थानीय कारीगरों द्वारा निर्मित उत्पादों की खरीद पर किए गए व्यय समग्र राजस्व प्राप्ति में योगदान देते हैं। जिस राजस्व का प्रयोग अवसंरचना के विकास विरासत के संरक्षण व संवर्धन में किया जा सकता है।

शेखावाटी की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की आवश्यकता क्यों ?: यह एक गंभीर प्रश्न है जिस पर विचार करने पर हम पाते हैं कि प्राचीन समय में विरासत के संरक्षण का कार्य बिना किसी प्रशासनिक संस्था, पुरातत्व विभाग के लोगों की श्रद्धा से जुड़ाव से अपने पूर्वजों के प्रति आस्था से होता चला रहा है। परंतु पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में हमें एक नई प्रकार की शिक्षा दि गई और उस शिक्षा से एक भाव पैदा होने लगा कि हमारी पुरानी चीज दकियानूसी हैं अगर हमको आधुनिक बनना है तो इन सबसे हटना होगा और उसका परिणाम यह हुआ कि हमारी विरासत की लगातार अनदेखी होती रही। हम अपनी श्रद्धा व जुड़ाव को खोते चले गए और उसका परिणाम यह हुआ कि हम समाज के रूप में विरासत के संरक्षण में जो भूमिका निभाते आ रहे थे उसको छोड़ दिया गया। पिछले 300 वर्षों में विरासत को इतना ज्यादा नुकसान हुआ है जो पिछले 3000 वर्षों में नहीं हुआ। संरक्षण व संतुलन की भारतीय सोच को छोड़कर विदेशी सोच का अनुकरण हमारी धरोहर के लिए घातक सिद्ध हुआ है। तीव्र आधुनिकता के दौर में अपनी विशिष्ट पहचान को बनाए रखना हमारे अस्तित्व रक्षण हेतु जरूरी है। हम लगातार वैश्वीकरण के प्रभाव से मोहित हो रहे हैं तकनीक से सामंजस्य बैठाते -बैठाते कहीं अपनी संस्कृति को पीछे छोड़ते जा रहे हैं ऐसे में सजग रूप से इस ओर ध्यान देकर इसका संरक्षण व संवर्धन करना हमारी प्राथमिकता में आना चाहिए।

संरक्षण की राह में प्रमुख चुनौतियां – सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करना समय की जरूरत है जिसके समक्ष प्रमुख चुनौतियां निम्न है –

- **जागरूकता की कमी**: हमारी धरोहर से लगातार काम होते लगाव के कारण हम अपनी जड़ों से काटने लगे हैं एक समाज के रूप में वह व्यक्तिगत रूप से धरोहर के प्रति अपनी जिम्मेदारी से लगातार पीछे हटते जा रहे हैं जो वर्तमान में धरोहर पर मड़राते खतरों का प्रमुख कारण है
- **अवसंरचनात्मक कमियां**: आधुनिक व्यावसायिक शिक्षा व तकनीक और अनुसंधान का पारंपरिक ज्ञान के मध्य अभिसरण बहुत कम है यह विरासत के संरक्षण में गंभीर बाधा है
- **धन की कमी**: एक तरफ सामाजिक अनदेखी व दूसरी तरफ सरकारी तंत्र द्वारा कम बजट आवंटन दोनों के चलते धन के अभाव में इस क्षेत्र का तिरस्कार लगातार जारी है।
- **पर्यावरण प्रदूषण:** ग्लोबल वार्मिंग व जलवायु परिवर्तन का प्रभाव न सिर्फ जीवित जीवन पर अपितु हमारी धरोहर हेतु भी एक गंभीर खतरा है। परिवेश में फैले प्रदूषण के चलते विरासती स्मारकों का लगातार क्षरण हो रहा है उदाहरण के लिए मथुरा की रिफाइनरी से निकले सल्फर डाइऑक्साइड का ताजमहल पर प्रभाव।
- **सार्वजनिक व निजी भागीदारी में कमी:** वर्षों की अपेक्षा में समाज के रूप में हम इस सोच की और अग्रसर हो गए हैं कि कोई और आए वह हमारे गांव, हमारे शहर में आसपास की धरोहर का संरक्षण करें हमारा इस कार्य में कोई सरोकार नहीं है जो की धरोहर के उत्तर जीविता पर संकट का सबसे बड़ा कारण है

केस स्टडी – विरासत के संरक्षण की आवश्यकता का महत्व समझाता रामगढ़ :- इस खंड में हम रामगढ़ के एक यात्रा अनुभव के आधार पर यह समझने की कोशिश करेंगे कि किस प्रकार संरक्षण का अभाव हमारी विरासत का अस्तित्व नष्ट करती चली जा रही है अतः इससे यह सीख सके कि इस और ध्यान देना हमारी उत्तरजीविता का आधार है -विरासत के संरक्षण की कितनी आवश्यकता है उसका एक आंखों देखा विवरण अपनी रामगढ़ के यात्रा के माध्यम से साझा करना चाहूंगी "रामगढ़ -हमारे राज्य की राजधानी से लगभग 125 KM दूर शेखावाटी क्षेत्र के सीकर जिले में स्थित एक कस्बा रामगढ़ जिसे "सेठों का रामगढ़" या रामगढ़ शेखावाटी के नाम से जाना जाता है। यह शहर जिसकी गिनती एक जमाने में देश के ही नहीं बल्कि दुनिया के सबसे अमीर शहरों में होती थी अपनी चरम अवस्था में इस शहर में अनेको भव्य हवेलियां व इमारतों का निर्माण हुआ जो यहां की एक व्यापारिक केंद्र की मेहता व सुंदरता का उदाहरण थे परंतु आज यह शहर भारत के नक्शे पर बना एक छोटा सा स्थान है इसकी कहानी व रहीसी बहुत धूमिल है और यह सब संरक्षण के अभाव का परिणाम है वर्षों से उपेक्षित इस कस्बे के उज्जवल अतीत की झलकियां हमें आज भी प्राप्त होती हैं यहां की समृद्धि के तिनके आज भी अपनी अस्मिता लिए खड़े हैं। जो भी रामगढ़ की गलियों से गुजरता है उसे इसके इतिहास की भव्यता चकाचौंध कर देती है। " यह केवल एक उदाहरण मात्र है हमारे देश में पग पग पर ऐसे हजारों सांस्कृतिक स्थल हैं जो संरक्षण की बाट जोह रहे हैं।

विरासत के संरक्षण हेतु कुछ सिफारिशें: हमें जो धरोहर हमारे पुरखों से विरासत में मिली है हमें उसका न सिर्फ संरक्षण करना है अपितु उसका संवर्धन करके उसे अपनी भावी पीढ़ियों को सौंपना है –

- **सामाजिक सहयोग को बढ़ावा देना**: विरासत के संरक्षण का यह कार्य समाज के सामूहिक प्रयासों व जागरूकता से ही संभव है। अपनी संस्कृति के संरक्षण की जिम्मेदारी हम सब की सांझी है, सामाजिक जागरूकता के अभाव में संरक्षण का कार्य संभव नहीं है अतः जागरूकता के प्रयास करना अति आवश्यक है इसके लिए हम कुछ नवाचार कर सकते है जैसे - AAPI का फॉर्मूला - A – Awake, A – Aware, P – Plan, I –Implement
- **प्रौद्योगिकी का प्रयोग:** आज का युग तकनीक की तीव्रता का युग है जिसमें हम लगातार Big data, Artificial intelligence, Nanotechnology, virtual and Augmented reality की ओरबढ़ते जा रहे हैं। इन सभी तकनीक की साधनों का प्रयोग हम धरोहर के संरक्षण व जागरूकता के प्रसार के लिए उचित रूप से कर सकते हैं।
- **सार्वजनिक:** निजी भागीदारी (PPP) पर विचार -सरकार द्वारा प्रयास किया जा रहे हैं परंतु संरक्षण के क्षेत्र में विकास हेतु निजी भागीदारी की आवश्यकता भी है जिससे धन की उपलब्धता की समस्या का समाधान होगा इस हेतु CSR फंड का प्रयोग किया जा सकता है तथा इसी के तहत " अडाप्ट ए हैरिटेज" योजना लॉन्च की गई है, तथा सरकार द्वारा 1000 से ज्यादा स्मारकों को निजी क्षेत्र के परिक्षण हेतु दिया जा रहा है साथ ही " स्मारक मित्र " जैसी अवधारणा भी महत्वपूर्ण है।
- **सांस्कृतिक शिक्षा और जागरूकता को बढ़ावा देना:** युवा पीढ़ी के बीच सांस्कृतिक विरासत के लिए गर्व और प्रशंसा की भावना पैदा करने के लिए स्कूली पाठ्यक्रम में सांस्कृतिक शिक्षा को शामिल करना आवश्यक है साथ ही सांस्कृतिक विरासत और इसके संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों और पहलुओं का विकास करना तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कार्यक्रम आयोजित करवाना कार्यशालाएं और इंटरएक्टिव अनुभव प्रदान करने वाली गतिविधियों का प्रारंभ करना आवश्यक है। वर्तमान में कई क्षेत्रों में ऐसे नवाचार किया भी जा रहे हैं उदाहरण के रूप में "चित्तौड़गढ़ जिले के शिक्षा विभाग द्वारा अंतर जिला ऐतिहासिक स्थल भ्रमण कार्यक्रम" इसका एक सुंदर उदाहरण है। ऐसे प्रयास हमें शेखावाटी क्षेत्र में भी करने होंगे।
- **परंपरा में तकनीक का सामंजस्य:** देश का विकास आवश्यक है परंतु वह समावेशी व सतत होना चाहिए। हमें आधुनिक तकनीकी युग का हिस्सा बनना है परंतु अपनी परंपराओं को भी जीवित रखना है। आधुनिक रेफ्रिजरेटर का प्रयोग करना है परंतु रसोई घर में एक स्थान मिट्टी के मटके का भी होना चाहिए, मिक्सर ग्राइंडर प्रयोग करना है साथ ही घर का एक कोना

पारंपरिक चक्की हेतु भी रखना है, ताकि भावी पीढ़ियां इनका महत्व समझ सके।

निष्कर्ष: हमारी विरासत हमारे राष्ट्रीय पहचान का दर्पण है । भारत की वैभवशाली संस्कृति ने अनेकों विदेशी आक्रमणों व वर्षों की गुलामी के बाद भी स्वयं को पुरजोर रूप से खड़ा रखा है एक नव स्वतंत्र देश हेतु जो विभाजन की त्रासदी से गुजर रहा हो, जिसके समक्ष गरीबी, असमानता, अशिक्षा जैसी अनगिनत चुनौतियां खड़ी हो उसके लिए विकास कार्यों पर ध्यान देना एक अपरिहार्य प्राथमिकता रही है । जिससे धरोहर के संरक्षण पर उतना ध्यान नहीं दिया गया जितना देना चाहिए । हमें यह याद रखना आवश्यक है की लोक संस्कृति के संरक्षण से ही उसकी निरंतरता संभव है, हमारी सांस्कृतिक विरासत राष्ट्रीय एकीकरण के साथ-साथ आर्थिक प्रगति व विदेशी मुद्रा प्राप्ति का एक साधन है तथा हमारे विशाल पर्यटन उद्योग का आधार भी यही विरासत है। आज जब हम लगातार एक विकसित भारत की तरफ बढ़ रहे हैं वह आजादी के 75 वर्षों को पूर्ण कर चुके हैंतथा एक विकसित भारत के निर्माण की ओर INDIA@2047 बढ़ रहे हैं ऐसे में हमें यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि हमें नए सिर्फ तीव्र विकास करना है अपितु समावेशी रूप से विकास करना है इस हेतु हमें हमारी धरोहरों के संरक्षण पर और अधिक ध्यान देना होगा जो हमें हमारा अतीत सीखाता है।

किसी भी क्षेत्र की संस्कृति उसे क्षेत्र की पहचान का आधार बिंदु है इस शोध पत्र में जिस प्रकार हमने शेखावाटी की संस्कृति के बारे में अध्ययन किया तथा उसकी धरोहर के संरक्षण की आवश्यकता पर बल देने का प्रयास किया उसे अवधारणा को मंत्र विचारो तक सीमित नहीं रखता है अपितु एक संकल्प के रूप में यह प्रण करना है कि उसे व्यक्तिगत रूप से और फिर सामाजिक रूप से अपनी संपूर्ण क्षमता में हमें अपने मूल (अनुच्छेद - 51 (क) मूल कर्तव्य 6) व नैतिक कर्तव्य का निर्वहन करना है तथा अपनी अमूल्य धरोहर और पहचान के आधारों का संरक्षण करना है इनको संवर्धित रूप से अपनी भावी पीढ़ियों को सुपुर्द करना है हमें धरोहर के संरक्षण का न सिर्फ संकल्प लेना है अपितु इस कार्य की सुनिश्चितता हेतु प्रयास भी करना है उसी से हम संकल्प से सिद्धि तक का सफर तय कर सकेंगे।

सन्दर्भ सूची

1. शर्मा, गोपीनाथ : 1990, राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, राजास्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
2. मील, डॉ. महेन्द्र : 2015, राजस्थानी लोकनाट्य और शेखावाटी ख्याल, सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर।
3. शेखावत, सुरजन सिहः 1989, शेखावाटी प्रदेश का प्राचीन इतिहास, सुरजन सिंह शेखावत स्मृति संस्थान प्रकाशन, झाझड़, झुंझुनू।
4. शेखावत, सौभाग्य सिंह : 1991, शेखावाटी केवीर गीत, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर।
5. Cooper, Ilay : Rajasthan exploring “the painted town of Shekhawati” प्रकाश बुक डिपो।
6. मिश्र, रत्नलाल : 1998, शेखावाटी का नवीन इतिहास, B.R. Publication
7. व्यास, हेतप्रकाश, 24 सितम्बर 2006, आबाद हुई हवेलियां, रविवारिय , राजस्थान पत्रिका
8. भारद्वाज, विनोद, 20 अक्टूम्बर, 2015 : मरुधरा का गौरव शेखावाटी, राजस्थान सुजस
9. 4 अक्टूबर, 2024 **:** दैनिक भास्कर, चित्तौड़गढ़ अंक
10. www. ramgarhshekhawati.com
11. www.bharatdiscovery.org.
12. www.m.bhaskar.com